



### श्रीभगवानुवाच॥

शृणु नन्दिन्महाभाग स्तवराजमिमं शुभम्।  
 सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैः सिद्धिदं सुखमोक्षदम् ॥२७॥  
 शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः।  
 त्रिकालं श्रद्धया युक्तैर्नातः परतरः स्तवः ॥२८॥

अस्य श्रीभवानीनामसहस्रस्तवराजस्य, महादेवऋषिः,  
 अनुष्टुप्छन्दः, आद्या शक्तिः, भगवती भवानी देवता, ह्रीं बीजं,  
 श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, आत्मनो वाङ्मनःकायोपार्जितपापनिवार-  
 णार्थं, सकलकामना सिद्ध्यर्थं पाठे/ होमे विनियोगः ॥

Bhavani Nama Sahasra Stuti Janaki Nath Kaul Kamal

by eGangotri

Ref :

<https://archive.org/details/BhavaniNamaSahasraStutiJanakiNathKaulKamal/page/n19/mode/1up>



विमलसुखसममभक  
गंतिनरुंतिपुत्रंमुकल  
यविकमङ्किगीलभा॥भिं  
रुभितभभुगभिसुत्रंम  
मुनं॥सुवनिठंमुगितमुःप



श्रीनमो भगवते ॥ त्रिनमो भगवते  
 भगवते ॥ त्रिनमो भगवते  
 ॥ मन्त्र भगवते ॥ भगवते  
 धिबन्तरी कठक कठक यन्त्र ॥ ० ॥  
 सुविदित भगवते भगवते

१० न  
 ५८

नैधयत्री॥ एतद्विष्णुगति  
 रूचीभुजगीक्रीकयत्री॥ १॥  
 म/उरुमभकचक्रं प्रकृमुच  
 मनभूमा॥ तपसुमक्तिप  
 गंरुवीचरमठयभा लि-रु  
 भा॥ ३॥

धूतमंभुं भक्तगोमुं कुरु न  
 नेभवीतिनीभा॥ वचनीका  
 लमंभुं गुरुभुं विदुधि  
 उभा॥ एतद्विदिकगोवृद्ध॥  
 विधुदुःखिः भुः॥ भुः

०० न  
 ५५

इंभगमेसनीनिभुकेविभ  
कडिलीभा॥५॥तिनभक  
वतु॥केलभमिपगभुके  
वमेवंभकेसुगभा॥पुनेभ  
उभाभीनंभुभत्रभापभकु

रभा॥६॥



भुगभुगसिगुगुलिङ्गादि  
 पुनंप्रभुभा॥भुभुमिगभा  
 नन्नीरुमुल्लिगठभट॥ १॥  
 मूनिचिकेसुगुज्ज्वामा॥वि  
 मवमवमगवमममममि

भुम  
 ५०



महानमः॥ गुरुभूमिकमिष्ट  
मिष्टुं पुं दुं कृतिवत् ॥३॥  
वराय भुवः कृष्टुः भुष्टुः  
मिष्टुः निमः॥ ५॥ विष्टुः  
नमः कृष्टुः भुष्टुः ॥७॥

इति धर्मसूत्रम् ॥  
 गङ्गासुतः ॥ भूवा मठाव न  
 केविकमत्रैश्वर्यम् ॥ १०० ॥  
 श्रीगङ्गावत्तम ॥ भाष्यम्  
 सुगन्धसूत्रम् ॥

४००  
 ५७

यग॥ भुक्तुं धिमयद्वेष्टुं

रुष्टुं कषयामिडा॥००॥

भुक्तुं कल्पयेल्लेक॥ मिष्ट

वृष्टुं मेष्टनः॥ शुभं स्वभय

मक्तिष्ठुलपूठमिष्टिडा॥०३



ॐ भू भवं भव भवः ॐ भू भवं  
 मन्त्रिभिः मन्त्रिभिः ॐ भू भवं  
 भू भवं भू भवं ॥०३॥  
 भू भवं भू भवं  
 भू भवं भू भवं ॥५॥

ॐ न  
 ५३

ॐ भस्मस्त्रिभुक्तिभील्लः ५

ॐ भा ॥ ०५ ॥ इति वगिदिवि

एष्टुः सत्रिः सवभर्षीधरा

धूमराभीष्टुगन्धः वमभ

ॐ मगसुदी ॥ ०५ ॥ इति मवे

ॐ भूर्वाग्नीश्वरी के भर्गो देवम ध्ये ॥  
 मित्रं भिक्षुं सुहृदं सुहृदं स  
 त्त्वं भव भद्रं त्वया धिनी ॥ ॐ ॥  
 त्वयै ह्यहं विष्णुभक्तः पश्यं  
 पश्यं ॥ त्वयै ह्यहं त्वत्तु भवत्तु



मेवभूलीयः॥०१॥सुजिह्व  
कृष्णकृष्णभवकवचिनिमि  
तः॥सुगणिकमुतमेवभव  
सिद्धमयिनी॥०३॥३६सु  
त्रयमेवकमेवमुतवन्नम  
मरुमेवमभिमिष्टैर्मूलैर्वभ

लिप्रसिद्धः॥०७॥भुवनत्र  
भुवभुभभवेधुविवेसभा॥  
उमगृभयधुभुमसुदभय  
भुभुभा॥१०॥उरुवभय  
भुभुभा॥१०॥उरुवभय  
भुभुभा॥१०॥उरुवभय  
भुभुभा॥१०॥उरुवभय

०००

नचभा॥१०॥मभवनंमभमुं॥

ममेलचनरुननभा॥मगमि

रुननकां॥मममुं॥११॥

नचिचममरुमे॥मुवेनन

नमचरु॥मुवेमगधंमकिं॥

मभानुगुरुकालिभा॥१२॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 भूमी ॥ धूम्रं भूमिं भूमीं भूमीं  
 भूमिं भूमीं भूमीं ॥ ३५ ॥ भूमीं भूमीं  
 भूमीं भूमीं भूमीं ॥ भूमीं भूमीं भूमीं  
 भूमीं भूमीं भूमीं ॥ भूमीं भूमीं भूमीं

ॐ नमो  
 ३५

भित्तवममभिधुममःत्रि  
वत्तंमयि॥१५॥येष्टःभुव  
भिमंभुष्टंमुत्तुष्टंभुष्टंभि॥  
मु॥उभिष्टंभुष्टंभुष्टं  
भुष्टंभुष्टं॥१५॥मु॥

उवम॥ सुगनचिन्मकठगमु  
 चगममिमंसुठभा॥ मरुमुन  
 मठिगिष्टैः मिष्टिमंसायमम  
 मभा॥ ३१॥ सुमिठिः पूउरु  
 इयमठिउष्टंमभादिउः॥ डि  
 कलसुसुयपुतेउ३ःमग

४५९ म०



ॐ  
 १: भुवः ॥ ३३ ॥ ॐ सुष्टु श्री  
 चानीन भमभु सुभुवग सु  
 श्रीभरु मेव दधिः । सुष्टु म  
 त्रिः । ठगवरी ठवनी मेव द  
 सुष्टु धा कवः । श्रीठवनी  
 श्रीष्टुं भमभरुल कभन मि

सुकंठव नीनभम ॥ कमुभुव  
 गगभा ० विनिषेणः ॥ सुषष्टु  
 नभा ॥ उचालकुमकुलठमं  
 ॥ मउवुकं हिलेनभा ॥ पमा  
 कुमसगं सुभं गयतीमिवं  
 ठम ॥ सुचेकुमं लिभभल्लम

६० म०

गठिचकुम्भमुद्राधाममालि  
कुम्भपालकमुद्राभा॥कुम्भ  
गगगसनठगंरिनेइंष्टुले  
शिवमुचनिगंभरुचिकुलदुनी॥भा॥  
श्रीगंमुगुचम॥ठिभरुचिमु  
रगगगगभरुलदुनीःशिव





गवश्रुतः॥ यद्गुविष्टुभक्त  
भावाचमभातभक्तपुतिः॥ १॥  
प्रीतिप्रियाभूमिस्तुमभक्तनी  
विष्टुचमिनी॥ भिष्टुविष्टुभ  
क्तमक्तिः॥ भुष्टीनभक्तमक्तिः॥ २॥  
॥ भुष्टुभक्तभुष्टुभक्तभुष्टुभक्त

धर्मलेमन ॥ १ ॥

धर्मलेमनी मरु भा ॥ मुन मु

नरिन मिनी ॥ सुल भायी मु

नेरु महे डिः कमु मरु मिनी ॥ २ ॥

मुन भा ॥ मुल्लुठ ॥ विष्ट ॥ धन डिः ॥ ३ ॥

मुग्व मिनी ॥ सुभरु मा मुर्ग

म. म.

७५





॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ भा  
 सुधिल्ली नगर भिंकी चै धुवी मम  
 के मगी ॥ कटु वनी मम भद्र म  
 भव भंभट्टिक रिल्ली ॥ ०० ॥ नर  
 वली भद्र निद्रु वीग निद्रु पूठ  
 वडी ॥ पूठु धाग भिद्रु पूठु धाग

७० म०  
 ३५



मधुमतीमधुः ॥००॥ श्रीगुरुव  
 भुताकालिका भिरुव कन ॥  
 ठिके ग मधुपद ग मधुन के  
 भन मित्रिः ॥०३॥ सुच विद्रुम  
 गणीगु चिमुभुता कलवरी ॥ १००॥  
 पद्मवरी भुवभु मधुभु मधु

१५३ ॥०३॥ ककुभन मणसू  
 हीवसुभाउ शिनेसुगी ॥ मि  
 नभाउ शिनेसू मसा मरुदंभ  
 चरुन ॥५॥ गहुनकीच  
 भद्रगुप्त क गमुपुत्रिक  
 गहनीतिभुषीच गुमकुनीतिः

६० मः

७७

एक नैक भद्रं शुभं मत्तव  
 रुद्रं रुद्रं ॥ १३ ॥ रुद्रं  
 रुद्रं रुद्रं रुद्रं रुद्रं  
 भिनी । रुद्रं रुद्रं रुद्रं  
 रुद्रं रुद्रं रुद्रं रुद्रं ॥ १४ ॥  
 रुद्रं रुद्रं रुद्रं रुद्रं

भूततिगीमृगी । मृगमवकुच  
 लमधुनधमधुवतिनी ॥१५॥  
 गङ्गा नील भित्तु मधु  
 पीतमकवुग । कुण्डल म  
 गच्छमुत्तरी कमल लय ॥१६॥  
 कल क धु भुक्तु मनि



निमेषकालमुधिली । मुक  
तः भनानामा मकः भसच  
गीगमा ॥११॥ गवूधियामुग  
वृममुभसमभनगतिः । भ  
गन विमुगकीमकधुगमे  
भयगिली ॥१३॥ भमयनिःभ

४५०  
३९

मीच गुरुपुद्गलचरंभिनी। सु  
हृदयगणमीनभद्रसुखकम्  
धिया ॥३०॥ भुवेलीपमद  
भुमभुक्तदगविभुम०।  
कदुर्गभेदनिःसुभापमि  
नीपमभक्ति ॥३१॥ यमि

नीमत्रुमुममहुमकीयति  
 ॥ २३ ॥  
 ममहिमुलवग्यागिनी ॥ २३ ॥  
 भव ॐ मत्रुमुममहु  
 ग्वग्वरुन ॥ २४ ॥  
 गवीगवीगधानमहेकु ॥ २४ ॥

०० म०



चमुपाचमुपागमराय  
माकमुगीमिव। विराय  
मरायत्रीमभुनीमडन  
मिनी॥३५॥ मनुचडीचम  
मक्तिचमवमगिली। मी  
उलमभमीलमचालपूरु

चित्र मिनी ॥ ३७ ॥ कुभा गीम  
 भुभल म क भा णु का भव  
 त्रिङ्ग । एल वृग्ग ननु  
 क भुभनिव मिनी ॥ ३७ ॥  
 क भगीरा वगी भट्ट भट्टम्  
 भगवत् । कुलभानभिर

६. म.

१३

३००

अम्हा अम्हा वसिष्ठे विष्णवे  
विनी ॥ ३५ ॥ भद्रं कर्म सुखं  
सुखं हि नन्दं च धनं सुखं । च  
मधुरं च धनं सुखं मधुरं  
सुखं विनी ॥ ३७ ॥ सुखं  
सुखं मीधं मीधं च कर्म वि

ठ । कथलठक ७ कली  
 कथलभलठकी ॥ ५० ॥  
 कथलठकलमीदु मिच  
 मुतीपनपुनिः । मिधुमव  
 धुमनिदु भदुभनपूर्वधि  
 नी ॥ ५१ ॥ कधुमीचवभुभमी

४० म.

७८



सुख सुखा रुडलया । रण  
सुख सुख लिनी रुणा कः  
मयिनी ॥ ५३ ॥ भूले भूत  
भूम मना हिन लभ उलि  
नी । भुला पाग निरुका राव  
क्रिऊ रु रुडलया ॥ ५३ ॥ व

३१३

बुद्धभूषणभीननिगण  
 निगमय । सुभेसुभगति  
 लीवपुदिनीचक्रिमंमूल ॥८८॥  
 वल्लीउतुमभुनधदुमभु  
 मल्लेनुप । उपस्थिनीउपःमि  
 मुमुभमःमिमुमयिनी ॥८९॥

०. म.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 भूय ॥ भगवत्पुत्रो भवति ॥ भ  
 पुत्रो भवति ॥ भगवत्पुत्रो भवति ॥  
 भूय ॥ भगवत्पुत्रो भवति ॥ भ  
 भूय ॥ भगवत्पुत्रो भवति ॥ भ  
 भूय ॥ भगवत्पुत्रो भवति ॥ भ  
 भूय ॥ भगवत्पुत्रो भवति ॥ भ

ॐ नमो

हृमिकिङ्कमभुभष्टुगेनमि  
 नी। भगवत्भक्तभक्तभक्तभक्त  
 इष्टुगलेमन ॥ ८३ ॥ वागुग  
 वक्तुभक्तवक्तुभक्तवक्तुभक्त, व  
 कीभुक्तिभक्तभक्तवक्तुभक्ति  
 नी ॥ ८७ ॥ मूल्यलालकवि

वक्ति

ॐ नमो



सुमन्वतुचिमिनी । सु  
शिकरा इति कृमा सुम  
मापुमान्नि ॥ ५० ॥ के  
लिकीकुलविष्टमभकुल  
कुलप्रसिद्धा । सुदलमकु  
रुम सुतुचिह्रम सुमन

मिनी ॥ ५० ॥



कुतर्हीतिरुमीभा कुतर्वेमविन  
 मिनी ॥७५॥ भै श्रीगवभीग  
 रिमीत्र निमू मिच ॥७६॥ म  
 दिक्क मन्नुक्क विः मभदक  
 विविम मरी ॥७७॥ कु किनीम

किनीमिधुक्त किनीमरुच कि  
 नी।मिड मिडधिय भुक्तमकल  
 वनमेवडा ॥७॥ गुरुभयग गुरु  
 चीभडुमगीविमभम।भक्तभा  
 गीचिनिममरु भडुविन  
 मिनी ॥७॥ मरुभडुलभक्तम

७० म०  
 ३९



मन्त्रमकुलवाभिनी। सुलिभा  
मिपुलेयेडमुभृक कभुमि  
ली ॥ ७७ ॥ सुधुमिमुधुमधु  
मसधुमानवभाभिनी। सुन  
मिनिपनधुधुमिउव रुमिउ  
मुयी ॥ ७८ ॥ मउः मभुसुमयन

म० वनकलभूषण । क० म० प्र० म०  
 डी क० म० म० गुरुभूषणलेखन ॥ १० ॥  
 हु० ठ० वृ० क० विष्णुमैलरुमै  
 ल० च० भिनी । च० म० भ० न० ग० व०  
 म० मि० च० च० म० न० च० भिनी ॥ ११ ॥  
 च० म० म० ग० भिनी । उ० धु० ले० म० भूषण  
 भूषणलेखनी ।

क० म०  
 ३३

कृतकृत्य भगवत्पदं मङ्गलकृतं वि  
 चिन्ता ॥ १७ ॥ मङ्गल मङ्गलीयं  
 भगवत्पदं विचिन्ता मङ्गलीयं  
 मङ्गलीयं मङ्गलीयं मङ्गलीयं ॥  
 विचिन्ता विचिन्ता विचिन्ता विचिन्ता ॥  
 विचिन्ता विचिन्ता विचिन्ता विचिन्ता ॥  
 विचिन्ता विचिन्ता विचिन्ता विचिन्ता ॥

॥

भक्तानां धर्मभागतिः ॥ १ ॥ श्री  
 भिन्नी भुक्तानां भिन्नकलम  
 सिनी। यद्वा यनम मेक क भम  
 भिन्नकलम भिन्नकलम ॥ १ ॥ भागिनी  
 यद्वा यनम मेक क भम  
 भिन्नकलम भिन्नकलम ॥ १ ॥ भागिनी

क. म.

३३



मकचिभ्रिय । महु गभानकिः  
 भूमककुसुमत्रिः कचिउर ॥  
 भीनभृहीमतीभाडमैकठणि  
 नीउठिडा । भिऊ भिनीभुषभा  
 मभुषभा यमसालिनी भिठा  
 एरुयिनीष्टिभुषभा सुठिचि  
 नी ॥ १३ ॥

श्रीगुरुद्विभक्तमैत्रकस्तुलीकलि  
 नमिनी। गुरुतीरावपेस्तु  
 धरुतुतीराभरुतिः॥१७॥ रा  
 गस्तुतीरास्तुतीरास्तुतीरा  
 द्वितीधिली॥ माभीकरुमिः  
 मास्तुतीरास्तुतीरास्तुतीरा॥ ३०॥

७० न

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मधुलतुमुपयेमग। सुकीकटु  
 ग्वीठीगकीमहिप्रगैगची॥ ३३॥  
 भद्रकमुमगेस्रीमभद्रकैगव  
 प्रमिग। निमुमुकभुनीम  
 मुकगलममननन॥ ३४॥  
 कगलविकगलमधिगधु

४० म०  
 ३५



धुगन मिनी। गुरु मते पु क सीम  
गुरु कुरु भुम म ॥ ३५ ॥ काम  
भुगी धर भाम क सी गी कुरु भ  
धिया। मा विव कुरु भुचल मभ  
विव कुरु भुचल म म ॥ भा उदि  
नी च ग रुरु भुम भ उरु ग भिनीन।



